योजना दस्तावेज

"एकीकृत (समन्वित) पालन–एक रोजगारपरक व्यवसाय"

जिला सहकारी मत्स्य विकास एंव विपण फैडरेशन लि0, हरिद्वार

पालन की जाने वाली मछली की प्रजाति :	पालन की जाने वाली बत्तख की प्रजाति :
रोहू, कतला, (भाकुर), मगृल (नैनी), ग्रस कार्प, सिलवर कार्प, कॉमन कार्प	खाकी कैम्पवेल, इंडियन रनर, सिल्हेट मेट, नागेश्वरी

परिचय

एकीकृत मत्स्य पालन का अर्थ है 'बतख पालन, मुर्गी पालन, अनाज खेती और मछलियों का एक साथ पालन करना'। एकीकृत पालन का मुख्य उद्देश्य है एकल पालन के अवशिष्ट पदार्थ का पुनर्चक्रण एवं संसाधनों का इष्टतम उपयोग करना। इस पालन में अवशिष्ट पदार्थों को फेंका नहीं जाता बल्कि उनका पुनर्चक्रण कर उपयोग किया जाता है।

एकीकृत मछली–सह–बतख पालन

तालाब में मछलीपालन के साथ बतख पालन का समन्वित खेती लाभप्रद व्यवसाय है। मछली सह बतख पालन से प्रोटीन उत्पादन के साथ बतखों के मलमूत्र का उचित उपयोग होता है। मछली सह बतख पालन से प्रति हेक्टयर प्रतिवर्ष 50–60 कुन्तल मछली, 15000–18000 अण्डे का उत्पादन किया जा सकता है। इस प्रकार के मछली पालन में लागत 40 से 60 प्रतिशत कम हो जाती है। पाली जाने वाली मछलियां और बतखें एक दूसरे की अनुपूरक होती हैं। बतखें पोखर के कीड़े–मकोड़े, मेढ़क के बच्चे, धोंधे, जलीय वनस्पति आदि खाती हैं। बतखों को तालाब के रूप में साफ–सुथरा एवं स्वस्थ परिवेश तथा उत्तम प्राकृतिक

भोजन उपलब्ध हो जाता है तो बतख के पानी में तैरने से पानी में आक्सीजन की घुलनशीलता बढ़ती है जो मछली के लिए आवश्यक है।

मछली पालन सम्बंधी व्यवस्थायें

- मछली पालन पुराने तालाबों के जीर्णोद्धार करके अथवा नए तालाबों का निर्माण करके शुरू किया जा सकता है। इसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. स्थल का चयन

- स्थल के करीब जल एवं बिजली की सुविधा होनी चाहिए। स्थल परिवहन के लिए सुगम मार्ग के करीब होना चाहिए।
- ऐसी मिट्टी जिसमें पानी रोकने की क्षमता हो तालाब निर्माण के लिए चिकनी, बलुई तथा रेतीली मिटटी का मिश्रण मछली पालन के लिए अच्छी मानी जाती है ।

2. तालाब निर्माण

- तालाब का आकर आयतकार रखना चाहिए तथा पूरब पश्चिम दिशा में होना चाहिए ताकि तालाब ज्यादा से ज्यादा हवा और धूप मिल सके। लम्बाई एवं चौड़ाई का अनुपात 1 :3 होना चाहिए।

- उपलब्ध जमीन का 70 -75 प्रतिशत भाग को तालाब के जलक्षेत्र के रूप में विकसित करना चाहिये तथा शेष भाग बांध निर्माण के लिए रखना।

- तालाब के सभी बांध मजबूत और पानी का प्रवेश एवं निकास का रास्ता सुरक्षित होना चाहिए ताकि बारिश के मौसम में तालाब को नुकसान नहीं पहुंचे। वहीं तालाब में पानी के आने-जाने का रास्ता इस प्रकार से हो कि बाहरी मछलियों का प्रवेश तालाब में नहीं हो पाए और न ही तालाब की संचित मछलियां बाहर जा सके।

- तालाब की औसत गहराई 4 से 6 फ़ीट होनी चाहिए यदि वर्षा के पानी पर आधारित तालाब है तो गहराई 8 से 10 फ़ीट रखी जा सकती है।

3. पुराने तालाबों की तैयारी

- तालाब में उगे जलीय पौधों में मछलियों के शत्रुओं को आश्रय मिलता ही है साथ ही ये तालाब की उर्वरकता को सोख लेते हैं तथा जल के संचयन में बाधा डालते हैं। इसके लिए तालाब की अच्छे से सफाई करवा लेनी चाहिए।

- परभक्षी मछलियां को तालाब में जाल बिछाकर या तालाब का पूरा पानी निकलकर बाहर किया जा सकता है।

- तालाब के पानी को थोडा क्षारीय होना मछली की वृद्धि एवं स्वास्थ्य हेतु अच्छा होता है। सामान्यत: 100 किलोग्राम भाखरा चूना का प्रति एकड़ जलक्षेत्र में छिडक़ाव मत्स्य बीज संचयन के करीब 10 से 15 दिन पहले कर दिया जाना चाहिए। 50 कि.ग्रा. का प्रयोग सर्दी शुरू होने एवं 50 कि.ग्रा. चूना का प्रयोग गर्मी के मौसम प्रारंभ होने पर करना अच्छा रहता है। अधिक अम्लीय जल वाले तालाबों में और भी अधिक भखरा चूना की आवश्यकता होती है।

- जिस तालाब में मछली पालन किया जा रहा है उस तालाब के पानी का पीएच मान 7.5 से 8.0 के बीच होना चाहिए। यदि पानी का पीएच इससे कम है तो पानी में चूने की मात्रा बढ़ाते जाना चाहिए जब तक पीएच मान 7.5 से 8.0 के बीच न हो जाए। पानी की क्षारीयता की जांच बाजार में उपलब्ध पी.एच. इंडिकेटर द्धारा आसानी से की जा सकती है।

4. <u>मत्स्य बीज संचयन</u>

- साधारणत: सम्मिलित रूप से 2500 की संख्या में 3" से 4" आकार के मत्स्य बीज इयरलिंग प्रति एकड़ जलक्षेत्र के दर से संचयन किया जाना चाहिए। इयरलिंग उपलब्ध ना होने पर या 4000-5000 की संख्या में 1 " से 2" आकार के मत्स्य बीज का संचयन प्रति एकड़ किया जा सकता है।
- कतला मछली 10 प्रतिशत, रोहू 25 प्रतिशत, मिर्गल 10 प्रतिशत, कामन कार्प 20 प्रतिशत, ग्रास कार्प 10 प्रतिशत, सिल्वर कार्प 25 प्रतिशत प्रति हैक्टैयर के अनुपात के हिसाब संचयन करना चाहिए।
- कई बार ऐसा होता है कि ग्रास कार्प और सिल्वर कार्प का बीज उपलब्ध नहीं हो पाता है तो ऐसी दशा में शेष चार प्रजाति कतला, रोहू, मिर्गल और कामन कार्प का संचयन कर सकते हैं इसके लिए कतला का 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, मिर्गल 15 प्रतिशत, कामन कार्प 15 प्रतिशत होना चाहिए।

5. <u>परिपूरक आहार एवं भोजन की मात्रा</u>

एकीकृत मत्स्य सह बत्तख पालन में बतखों की विष्ठा तालाब में प्रकृतिक भोजन तैयार करने में मदद करती है परंतु मछलियों की तेजी से वृद्धि और अधिक उत्पादन के लिए परिपूरक आहार देना भी जरुरी होता है।

ग्रास कार्प के लिए तालाब में परिपूरक आहार के रूप में बरसीम, घास, केले, मकई, बाजरा के पत्ते देने चाहिए। ग्रास कार्प अपने वजन के 2-3 गुना प्रतिदिन खा जाती है।

6. <u>हार्वेस्टिंग एवं विपणन</u>

कार्प प्रजाति की मछलियाँ ठंडे मौसम में भी तालाबों में रह सकती हैं इसलिए इनकी निकासी एवं विपणन एक साथ न करके बीज डालने के 8-10 माह पश्चात समय-समय पर बाजार की मांग के हिसाब से करते रहना चाहिए। वर्षभर मछली लगातार पैदा करने के

लिये निकली गयी मछलियों की संख्या और अनुपात के अनुसार अतिरिक्त बीज डालते रहना चाहिए।

7. उपज

मछली पालन विधि में मत्स्यपालक एक एकड़ तालाब में साल में कम से कम 25 कुंतल उत्पादन ले सकता है। प्राय: 10-12 माह में कतला एवं सिल्वर कार्प 800-900 ग्राम, रोहू एवं नैनी 500-600 ग्राम तथा कॉमन और ग्रास कार्प 1-1.5 किलो की हो जाती है।

बतख पालन से संबधित व्यवस्थएं

1. बतखों के लिए बाड़ा (घर)

बतख दिन के समय तालाबों में विचरण करती हैं, रात में उन्हें घर की जरूरत होती है। तालाबों की मेढ़ पर ईंटों का पक्का या बांस, लकड़ी से निर्मित कम लागत वाला बाड़ा बनाना चाहिए। बाड़ा हवादार व सुरक्षित हो। तालाब के पानी के सतह के ऊपर तैरता हुआ बतख घर भी बनाया जा सकता है, तैरते हुए धर का फर्श इस प्रकार होना चाहिए कि बतख की विष्ठा सीधे पानी में गिरे। बतख धर को हमेशा साफ–सुथरा एवं सूखा रखना चाहिए। बतखों का बाड़ा इतना बड़ा होना चाहिए कि प्रति बतख कम से कम 0.3 से 0.5 वर्गमीटर की जगह हो।

2. बतखों का चयन

भारतीय प्रजातियों में सिलहेट मेटे और नागेश्वरी महत्वपूर्ण हैं। मछलियों के साथ बतख पालन हेतु इंडियन रनर प्रजाति सबसे उपयुक्त पाई गई है। खाकी केम्पबेल प्रजाति भी लोकप्रिय है। 2–3 माह में बच्चों को आवश्यक बीमारी रोधक टीके लगवाने के बाद पालन हेतु उपयोग में लाना चाहिए। सामान्यतः एक हेक्टर के लिए 200–300 बतख पर्याप्त होती है, जो एक हेक्टर जलक्षेत्र हेतु खाद के रूप में विष्ठा देने के लिए पर्याप्त होती हैं। एक बतख, एक दिन में करीब 125 ग्राम विष्ठा का त्याग करती है।

3. बतखों के लिए पूरक आहार

तालाब में उपलब्ध प्राकृतिक भोजन बतखों के लिए पर्याप्त नहीं होता, इसलिए बतखों को पूरक आहार भोजन के रूप में देना चाहिए। पूरक आहार के रूप में बतख मुर्गी आहार और राइसब्रान कोढ़ा 1: 2 के अनुपात में 100 ग्राम प्रति बतख प्रतिदिन खिलाया जाता है। आहार बतखों के घर या मेड़ पर दिया जा सकता है। बतख घर में काफी गहरे 15 सेंटीमीटर चौड़े, 5 सेटीमीटर लम्बे बर्तनों में पानी रखना चाहिये।

4. अण्डों की प्राप्ति

बतख 24 सप्ताह की आयु होने पर अण्डे देने प्रारंभ करती है तथा 2 वर्ष तक बतख अण्डे देती है। बतख रात में ही अण्डे देती है। अण्डे देने के लिए बतख धर मे कछ सूखी धास या पैरा विछाना चाहिए। सुबह अण्डे एकत्रित कर लें।

5. बतखों की विष्ठा का उपयोग

बतख की विष्ठा का उपयोग खाद के रूप में किया जाता है। बतख की अपनी विष्ठा तालाब में त्यागती रहती है। ऐसी स्थिति में अन्य कोई खाद या उर्वरक तालाब में डालने की आवश्यकता नहीं है। बतख बाड़ा में रात्रि में एकत्र हुई विष्ठा सुबह तालाब में डाल देना चाहिए। एक बतख एक दिन में लगभग 125 से 150 ग्राम विष्ठा का त्याग करती है। इस प्रकार प्रति हेक्टर प्रतिवर्ष 1 हजार किलोग्राम से डेढ हजार किलाग्राम विष्ठा प्राप्त हो जाएगी। विष्ठा में 81% नमी, 0.51% नाइट्रोजन तथा 0.38% फास्फेट होती है। विष्ठा मछली के वृद्धि के लिए लाभदायक है।

5. बतखों के स्वास्थ्य की रक्षा

प्रत्येक माह बतखों का स्वास्थ्य संबंधी परीक्षण करना चाहिए। बतख की आवाज में परिवर्तन, सुस्त चाल, कम मात्रा में भोजन ग्रहण करना, नाक व आंख से लगातार पानी का बहना इत्यादि लक्षण पाए जाने पर बीमार बतख को तालाब में नहीं जाने देना चाहिए और तुरन्त पशु चिकित्सक से सलाह लेकर उपचार करवाना चाहिए।

6. उत्पादन

मछली सह बतख पालन से प्रति हेक्टर प्रतिवर्ष 50–60 कुन्तल मछली का उत्पादन सम्मलित है साथ ही 14 हजार से 15 हजार अण्डे उपलब्ध होंगे। इस प्रकार मछली के साथ–साथ बतख पालन करने से मत्स्य पालकों को अतिरिक्त आय मिल सकेगी।

मछली सह बतख पालन से लाभ

1. मछलियां बतख की गिराई गई खुराक तथा विष्ठा को भोजन के रूप में ग्रहण करती हैं, जिसके कारण अतिरिक्त कृत्रिम आहार मछलियों को नहीं देना पड़ता।
2. बतखें जलीय वनस्पति पर नियंत्रण रखती हैं।
3. बतखों को अपने भोजन का 50–60% भाग जलक्षेत्र से ही प्राप्त हो जाता है तथा कीड़–मकोड़े, पौधे, मेढ़क के बच्चे भोजन के रूप में ग्रहण करती हैं, जो कि मछलियो के लिए हानिकारक है।
4. तालाब में बतख के तैरते रहने से वायुमण्डल की ऑक्सीजन निरंतर पानी में धुलती है।
5 बतख भोजन के लिए तालाब के तल की मिट्टी को उछालती रहती हैं, जिसके कारण उसमें विद्यमान पोषक तत्व पानी में आते रहते हैं, जिससे जलक्षेत्र की उत्पादकता में वृद्धि होती है।

UKCDP परियोजना अंतर्गत सहकारी मत्स्य जीवि समितियों के माध्यम से कार्प पालन

जिला मत्स्य पालन एवं विपणन फेडरेशन (मत्स्य पालन विभाग, उत्तराखण्ड) UKCDP परियोजना अंतर्गत मत्स्य जीवि समितियों का गठन कर एकीकृत मत्स्य पालन योजना पर

कार्य कर रहा है। योजना के प्रथम चरण में हरिद्धार जिले की सहकारी मत्स्य जीवी समितियों के माध्यम से एकीकृत मत्स्य सह बत्तख पालन एवं इसकी मार्केटिंग का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में 2 समितियों के 22 मत्स्य पालकों द्धारा लगभग 5 हेक्टेयर जलीय क्षेत्र में पालन किया जा रहा है। UKCDP परियोजना अन्तर्गत मत्स्य जीवि समितियों को तालाब सुधार, बत्तख बाड़ा , बिजली-पानी की व्यवस्था, तालाबों की घेरबाड़ , बीज एवं फीड, निगरानी कक्ष आदि आवश्यक सामग्री हेतु ऋण् उपलब्ध करवाया जा रहा है।

कार्प उत्पादन की क्रियान्वन योजना

- जिला मत्स्य पालन एवं विपणन फेडरेशन (मत्स्य पालन विभाग, उत्तराखण्ड) की मत्स्यजीवि समितियों के माध्यम से अगले 8 वर्षों में 100 एकड़ (40 हेक्टेयर) भूमि पर जल क्षेत्र विस्तार कर एकीकृत मत्स्य पालन की योजना है।
- वर्तमान में कार्प मत्स्य बीज़ उत्पादन मत्स्य विभाग द्धार स्थापित कार्प हैचरीयों में किया जा रहा है। अलग अलग प्रजातियों का बीज का उत्पादन मई से लेकर अगस्त माह तक होता है। मछली बीज का संचयन इसी दौरान नर्सरी तालाबों में किया जायेगा।
- नर्सरी तालाबों में तैयार फिंगरलिंग (3 माह बाद) और स्टंटेड बीज़ (8-10 माह बाद) तय संख्या एवं अनुपात से स्टॉकिंग तालाबों में संचयित किया जायेगा।
- कार्प मछलियों की हार्वेस्टिंग एक साथ न करके बीज डालने के 8-10 माह पश्चात बाजार की मांग के हिसाब हर चार माह के अंतराल पर किया जायेगा। वर्षभर मछली लगातार पैदा करने के लिये निकली गयी मछलियों की संख्या और अनुपात के अनुसार अतिरिक्त बीज डाले जायेंगे। इस प्रकार से एक वर्ष में 3 बार हार्वेटिंग करवाई जाएगी।
- कार्प मछलियों का प्रति एकड़ उत्पादन समान्यतः 25 कुंतल अनुमानित है पर मत्स्यपालक बेस्ट मैनेजमेंट प्रैक्टिसेज अपनाकर औसत से अधिक उत्पादन ले सकते हैं।
- बत्तख के बच्चे तैयार करने के लिए समितियों के माध्यम से बत्तख हैचरी का निर्माण थिथकी क़ादपुर सहकारी मत्स्यजीवी समिति, नारसन जिला हरिद्धार में करवाया गया है।

सहकारी मत्स्य जीवि समितियों के माध्यम से कार्प पालन एवं मार्केटिंग योजना के मुख्य बिंदु

- UKCDP योजना अंतर्गत भूमिहीन मत्स्य पलकों का चयन किया गया है ऐसे मत्स्य पालकों को निजी या समिति बना कर ग्राम समाज के तालाबों को कम से कम दस साल के लिए पट्टे पर लेना होगा। भूमिधर किसान भी समितियों का गठन कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

- चयनित समितियों का सर्वप्रथम ज़िला मत्स्य पालन एवं विपणन फेडरेशन के साथ रजिस्टर्ड अनुबन्ध होगा। अनुबन्ध के अनुसार फेडेरशन समितियों को आधारभूत संरचना निर्माण, बीज, फ़ीड का उचित आंकलन कर UKCDP योजना के माध्यम से ऋण् दिया जायेगा। मछलियों की निकासी कर बिक्री फेडेरशन के मध्यम से की जायेगी।

- फेडेरेशन मत्स्य उत्पादन हेतु आवश्यक तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए फेडेरेशन विशेषज्ञ की सेवाएं ली जाएंगी जिसका खर्च फेडरेशन वहन करेगी।

- फेडेरशन समितियों के यहाँ बाजार हेतु तैयार मछली एवं अण्डे के स्टॉक का आंकलन कर उसके हार्वेस्टिंग, पैकजिंग, कोल्ड चेन परिवहन एवं विपणन में मदद करेगा। इन सब जरूरतों को पूरा करने का खर्च समिति द्धारा उत्पादन के विक्री से पूरा किया जायेगा।

- उत्पादन को पहले नजदीकी मत्स्य मंडी में एकत्रित किया जायेगा यहाँ पर एक सुपरवाइजर रखा जायेगा जो की समिति /मत्स्य पालकों के उत्पादन के आंकड़े रखने एवं विपणन में मदद करेगा। सुपरवाइजर का खर्च फेडरेशन वहन करेगा।

- मत्स्य विपणन दो प्रकार से किया जायेगा - (1) **थोक**: फेडेरशन समितियों के माध्यम से संचालित मत्स्य मण्डी में बोली लगा कर बड़े एवं छोटे व्यपारियों को उत्पादन बेचेगा और (2) **फुटकर**: फेडरेशन, 'उत्तराफिश' के स्टाल और फ्रेंचाइजी के माध्यम से देहरादून एवं अन्य शहरी क्षेत्रों में तथा 'मोबाइल रिटेल आउटलेट' से रिहायशी इलाकों में मछली एवं उसके मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार कर विपणन करेगा।

- अण्डों का विपणन उत्तरा फिश के रिटेल स्टोर के माध्यम से किया जायेगा

- विपणन में आने वाले परिचालन व्यय को फेडरेशन समितियों /मत्स्यपालकों से आय का 10 प्रतिशत शुल्क के रूप में लेगा।

- फेडेरशन, मत्स्य विभाग एवं अन्य विभागों के माध्यम से संचालित विभिन्न योजनाओ के कन्वर्जेन्स से मत्स्य पालक समितियों को आवशयक आधारभूत ढाँचा निर्माण, इन्पुट्स में सब्सिडी उपलब्ध कराकर मत्स्य पालन की लागत कम कर लाभ में बढोतरी के लिए प्रयास करेगी।

<u>भूमिका एवं जिम्मेदारियां</u>

- इस बिज़नेस मॉडल एवं पूरी परिक्रिया में दोनों मत्स्यपालक समितियां और फेडेरशन अहम् भूमिका में होंगे । जहाँ मत्स्यपालकों की जिम्मेदारी, तालाब में मछली एवं अण्डे तैयार करना, तालाबों एवं बत्तखों का रख-रखाव और दैनिक कार्यों में श्रम की होगी वहीँ फेडेरशन के द्धारा मछली एवं अण्डों के स्टॉक का आंकलन कर उसके हार्वेस्टिंग, पैकजिंग, कोल्ड चेन परिवहन एवं विपणन का कार्य किया जायेगा।

- फेडेरशन तालाब निर्माण एवं अन्य आधारभूत ढांचों के निर्माण की तकनीकी पूर्ण करये जाने में मदद करेंगे। इसके अलावा फेडेरशन, बीज़, फ़ीड एवं चूजे की गुणवन्ता भी र्सामग्री प्राप्त करने में समितियों की मदद करेगा।
- फेडेरशन तकनीकी विशेषज्ञ की मदद से तालाबों का विभन्न मछली प्रजातियों एवं मत्स्य बीज संख्या, चूजे एवं कुल फीड का आंकलन करेगा।
- फेडरेशन समय समय पर मत्स्य पलकों को तकनिकी संस्थान के सहयोग से प्रशिक्षण एवं बड़े उद्यमियों के तालाबों का एक्सपोजर विजिट करवाएगा।

- फेडेरशन मत्स्य उत्पादन की गुणवन्ता को बरक़रार रखने एवं अधिक समय तक बनाये रखने हेतु आइस प्लांट, प्रशीतित वैन, एवं कोल्ड स्टोरेज उपलब्ध करवाकर बाजार सुनिश्चित करेगा।
- एकीकृत मछली सह बत्तख पालन का मत्स्य जीवी समितियों के माध्यम से पालन का 'एक एकड़ ' मॉडल तैयार किया गया है इसमें औसत 25 कुंतल मछली एवं 8000 अण्डों के एक फसल चक्र यानि 10-12 माह में उगाने का लक्ष्य है। मछली की निकासी बीज संचयन के 10 माह बाद हर चौथे माह होगी इस प्रकार एक वर्ष में तीन बार निकासी एवं बीज संचयन होगा। बाजार में कार्प की अनुमानित फूटकर क़ीमत रू 110-150 प्रति किलो ग्राम रहती है। बत्तख के अण्डे की अनुमानित फूटकर क़ीमत 7 रु प्रति अण्डा रहती है।
- यदि मत्स्यपालक एक फसलवर्ष में एक एकड़ (छ : बीघा) के तालाब से मछली-सह-बत्तख पालन करता है तो 5 वर्षीय कुल लागत एवं लाभ विश्लेषण के अनुसार शुद्ध लाभ 5 वर्षों में लगभग 12.6 लाख रु होगा। प्रति एकड़ मछली का उत्पादन लगभग 26 कुंतल तथा बत्तख के अण्डे 8000 होग़ा।

परियोजना के संभावित प्रभाव

- भूमिहीन मत्स्य पालक ग्राम समाज के गंदे तालाबों का जीर्णोद्धार करवाकर एवं भूमिधरी मत्स्यपालक बंजर भूमि पर तालाब निर्माण करवाकर पंगास का सघन पालन कर अपनी आय को सुदृढ़ कर सकते हैं।
- कार्प मछली की प्रदेश एवं प्रदेश से बाहर बड़ी मांग रहती है। मौजूदा समय में प्रदेश के मैदानी ज़िलों हरिद्धार और ऊधम सिंह नगर में कार्प का उत्पादन किया जा रहा है। परंतु इसके उत्पादन की अपेक्षा मांग अधिक होने के कारण इसका आयात अन्य प्रदेशों से भी किया जा रहा है। मत्स्य जीवी समितियों के माध्यम से कार्प पालन कर बाज़ार की मांग को पूरा किया जा सकेगा इससे मत्स्य पालकों को आर्थिक लाभ मिलेगा।
- समितियों के तालाबों से तैयार कार्प मछली मछलियों को उत्तराफिश के ब्रांड से एक नयी पहचान मिलेगी।
- जिन्दा अवस्था में कार्प मछली मछली का विक्रय संभव है ऐसा करने से एक ओर मछली का अधिक दाम मिलेगा वहीँ ग्राहकों को ताज़ा मछली खाने को उपलब्ध होगी।
- कार्प मछली के मूल्य संवर्धित उत्त्पाद जैसे आचार बना कर बड़े स्टोर्स में बेचा जा सकता है इससे उत्पाद की अच्छी कीमत मत्स्यपालकों को मिल सकेगी।

प्रश्नोतर

1. इस योजना का लाभार्थी कौन कौन और कैसे हो सकता है?
   उत्तर:- सहकारी मत्स्यजीवी समितियों के सदस्य इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। यदि कोई मत्स्य पालक समिति का सदस्य नहीं है और इस योजना का लाभ लेना चाहे तो वह समिति की सदस्यता प्राप्त कर इससे जुड़ सकता है। इच्छुक मत्स्यपालक समिति द्धारा प्रस्तावित अनुबंध में अंकित नियमों एवं शर्तों पर सहमति प्रदान कर योजना का लाभ ले सकते हैं।
2. क्या मत्स्य पालक के पास स्वयं की भूमि अथवा तालाब होना आवश्यक है?
   उत्तर:- नहीं, भूमिहीन मत्स्यपलक ग्राम समाज के तालाबों को कम से कम दस साल के लिए पट्टे पर ले कर कार्य कर सकते है।

3. मत्स्य पलकों को इस योजना से जुड़ने से क्या लाभ होगा?

मत्स्यपालकों को इस योजना से निम्न लाभ संभव हैं:

- मत्स्य पालन क्षेत्र में अधिकांश मत्स्यपालक छोटे और सीमांत हैं। कम व्यक्तिगत उत्पादन के कारण, इन मत्स्यपालकों को कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, जैसे उत्पादन स्तर और संबंधित क्रेडिट सुविधाओं को बढ़ाने के लिए सीमित निवेश, गुणवत्ता वाले बीज और फ़ीड तक पहुंच की कमी और बाजारों तक कम पहुंच, जिससे कम लाभ मार्जिन होता है। इसके अलावा, उपज से बाजार के बीच कुछ मध्यस्थों की उपस्थिति के कारण, प्राथमिक उत्पादक को उस मूल्य का केवल एक छोटा सा हिस्सा प्राप्त हो सकता है।
- जिन तालाबों की बंदोबस्ती अकेला मत्स्यपालक नहीं ले सकता वहां वे सहकारी समिति बनाकर आसानी से कम खर्च में प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार मिल-जुल कर मछली उत्पादन करने से सदस्यों के साथ साथ समिति को लाभ होगा।
- सहकारी मत्स्य जीवी समितियाँ UKCDP योजना से तालाब सुधार, इनपुट एवं क्रियाशील पूँजी इत्यादि के लिए ऋण प्राप्त कर सकती है।
- तालाबों से अधिक से अधिक मत्स्य उत्पादन हो इसके लिए फेडेरशन द्धारा विशेषज्ञ परामर्श मिलेगा।
- मत्स्य विपणन फडरेशन के माध्यम से किया जायेगा। जिससे मत्स्य पालनो को मछली का सही दाम मिल सकेगा।
- मत्स्यपालकों को समय पर गुणवक्तापूर्ण फ़ीड एवं सीड की उपलब्ध्ता सुनिश्चित होगी।
- समिति के माध्यम से कार्य करने में लागत घटेगी एवं प्रति व्यक्ति अधिक मुनाफा मिलेगा।

Filename:	□□□□□
Directory:	C:\Users\aman\Documents
Template:	C:\Users\aman\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	
Subject:	
Author:	Windows User
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	23-Aug-22 8:38:00 PM
Change Number:	8
Last Saved On:	23-Aug-22 9:47:00 PM
Last Saved By:	Windows User
Total Editing Time:	42 Minutes
Last Printed On:	23-Aug-22 9:50:00 PM

As of Last Complete Printing

Number of Pages:	10
Number of Words:	2,548 (approx.)
Number of Characters:	14,528 (approx.)